बहारे तहरीर

(पहला हिस्सा)

ABDE MUSTAFA

हमारे प्यारे नबी ﷺ की विलादत बारह रबीउल अव्वल को हुई

हमारे प्यारे नबी ﷺ की विलादत माहे रबीउल अव्वल की बारहवीं तारीख़ को हुई और इस पर हमारे पास कषरत से दलाईल मौजूद हैं। तारीखे विलादत में इख्तिलाफ भी है लेकिन जम्हूर के नज़दीक बारह रबीउल अव्वल ही दुरुस्त है। नीचे कुछ किताबों के हवाला जात पेश किये जाते हैं जिन में तारीखे विलादत बारह रबीउल अव्वल को ही करार दिया गया है।

(1) سیرت ابن اسحاق بہ حوالہ الوفا، ص87

(2) سیرت ابن ہشام، ج1، ص107

(3) تاریخ الامم والملوک المعروف بہ تاریخ طبری، ج2، ص125

(4) اعلام النبوۃ، ص192

(5) المستدرک للحاکم، ج2، ص603

(6) عیون الاثر، ج1، ص33

(7) تاریخ ابن خلدون، ج2، ص394

(8) سیرت ابن خلدون، ص81

(9) المورد الروی للقاری، ص96

(10) محمد رسول اللہ، ج1، ص102

(11) حجۃ اللہ علی العالمین، ج1، ص231

(12) ما ثبت بالسنۃ، ص31

(13) نور الابصار، ص13

(14) النعمۃ الکبری، ص20

تاریخ اسلامی، ص35 (15)

معارج النبوۃ، ج1، ص37 (16)

مدارج النبوۃ، ج2، ص18 (17)

سیرت حلبیہ، ج1، ص93 (18)

المواہب اللدنیۃ، ج1، ص132 (19)

بلوغ الامانی، ج2، ص189 (20)

تاریخ الخمیس، ص196 (21)

البدایہ والنھایہ، ج2، ص260 (22)

بیان المیلاد النبوی، ص50 (23)

فتح الباری، ج8، ص130 (24)

فقیہ السنۃ، ص60 (25)

کتاب اللطائف، ص230 (26)

سرور القلوب، ص11 (27)

فتاوی رضویہ، ج26، ص411 (28)

اسلامی زندگی، ص106 (29)

فتاوی نعیمیہ، ص46 (30)

تبرکات صدر الافاضل، ص199 (31)

رسائل کاظمی، ص2 (32)

سیرت رسول عربی، ص43 (33)

ذکر الحسین، ص116 (34)

(35) فتاوی مہریہ، ص110

(36) جنتی زیور، ص473

(37) دین مصطفی، ص84

(38) محمد نور، ص56

(39) کتاب فارسی، ص80

(40) انوار شریعت، ص9

(41) الخطیب، ص121

(42) تواریخ حبیب الہ، ص13

(43) جمال رسول، ص11

(44) رسالہ میلاد نمبر، ص24

(45) پیش لفظ تصفیہ مابین سنی وشیعہ

(46) فیصلہ ہفت مسئلہ، ص4

دیوبندیوں، وہابیوں اور شیعوں کی کتب سے ثبوت:

(47) میلاد النبی از اشرف علی تھانوی، ص90

(48) سیرت خاتم الانبیا، ص19،20

(49) ہادی عالم، ص43

(50) ہفت روزہ، مارچ 1977، ص7،18

(51) قصص النبیین، ج5، ص27

(52) نفحۃ العرب، ص141

(53) خاتون پاکستان رسول نمبر، ص36

(54) رحمت عالم، ص13

(55) ماہنامہ محفل لاہور، مارچ 1981، ص65

(56) خاتون پاکستان رسول نمبر، ص839

(57) الشمامۃ العنبریہ، ص8

(58) رسول اکرم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، ص21،22

(59) اکرام محمدی، ص270

(60) سیرۃ الرسول، محمد بن عبدالوہاب

(61) سید الکونین، ص60

(62) حیاۃ القلوب، ج2، ص112

کتب عامہ اور تاریخ ولادت:

(63) سید الوری، ج1، ص88

(64) سیرت احمد مجتبی، ج1، ص5،147،149

(65) تاریخ مکۃ المکرمہ، ج1، ص211

(66) الامین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، ص191

(67) محمد سید لولاک، ص118

(68) ہمارے پیغمبر، ص219

(69) ہمارے رسول پاک، ص43

کتاب شان محمد، ص234 (70)

محمد رسول اللہ، ص30 (71)

شواہد النبوۃ، ص52 (72)

معلومات عامہ، ص61 (73)

نور کامل، ص36 (74)

اسلامی تہذیب و تمدن، ص347 (75)

ماہنامہ ترجمان اویس، ص71 (76)

ماہنامہ نور الحبیب، اکتوبر1989، ص41 (77)

سیرت کوئز، ص18 (78)

موضح القرآن، ص33 (79)

کیلنڈر از علامہ اکرم رضوی (80)

جان جاناں، ص117 (81)

علموا اولادکم محبت رسول اللہ، ص99 (82)

خاتم النبیین، ص118 (83)

حیات محمد ﷺ، ص26 (84)

ماہنامہ جام عرفان، اکتوبر1984 (85)

ہفت روزہ الفقیہ، میلاد نمبر1932، ص140 (86)

نورانی شمع ترجمہ قرآن مجید، ص13 (87)

تاریخ اسلام از محمود الحسن، ص31 (88)

تاریخ ملت، ص34 (89)

رسالت مآب، ص9 (90)

خاتم المرسلین، ص78 (91)

تفسیر ضیاء القرآن، ج5، ص665 (92)

حاشیہ الروض الانف، ج1، ص107 (93)

ضیاے حرم، عید میلاد النبی نمبر، ص184 (94)

سیرت سرور عالم، ص93 (95)

خطبات الاحمدیہ، ص12 (96)

اسلام کی پہلی عید، ص33 (97)

فضیلت کی راتیں، ص27 (98)

اشرف السیر، ص146 (99)

سیرت رسول اکرم، ص7 (100)

ماہنامہ التزکیہ، جولائی2002، ص11 (101)

جواز الاحتفال، ص12 (102)

برکات میلاد شریف، ص3 (103)

ہمارے حضور، 17 (104)

زریں فرمودات، ص401 (105)

بھاگوات پران، باب2، شلوک18 بہ حوالہ جان جاناں (106)

الدرالمنتظم، ص89 (107)

انوار شریعت، ص9 (108)

قومی ڈائجسٹ، خصوصی نمبر1989، ص50 (109)

(110) الخطیب، ص121

(111) فقہ السیرۃ، ص60

(112) نشر الطیب از تھانوی، ص22

(113) حیات رسول، ص92

(114) محبوب کے حسن و جمال کا منظر، ص11

(115) عید میلاد النبی کی شرعی حیثیت، ص1

کتب نصاب، انگریزی کتب اور بارہویں تاریخ:

(116) خالد دینیات برائے جماعت سوم

(117) دینیات برائے جماعت پنجم، ص55

(118) الکتاب العربی برائے جماعت ہفتم، ص16

(119) اردو کی ساتویں کتاب، ص17

(120) اردو کی آٹھویں کتاب، ص3

(121) اردو کی آٹھویں کتاب، ص18

(122) اسلامیات نہم و دہم، ص88

(123) مطالعہ پاکستان نہم و دہم، ص119

(124) اسلامیات لازمی بی اے

(125) معیار اسلامیات لازمی بی اے

(126) اردو، دائرہ معارف اسلامیہ، 12،19

(127) مقالہ سیرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، ص12

(128) انگلش کی آٹھویں، ص1، پنجاب ٹیکسٹ بک بورڈ

(129) انگلش کی دسویں، ص5

(130) سیرت رسول اللہ، آکسفورڈ یونیورسٹی لندن، ص69

(131) دی لائف آف محمد، ص23

(132) محمد دی فائنل میسنجر، ص50

(133) پروس پیکٹس، 2010، ص162

(ملخصاً: بارہ ربیع الاول ایک جامع تحقیق)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

मिलाद पर ख़ुशी मनाने का अनोखा अंदाज़

शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे देहेलवी के वालिद -ए- गिरामी शाह अब्दुर्रहीम मुहद्दिसे देहेलवी अलैहिर्रिहमा मिलाद-ए-मुस्तफ़ा ﷺ की ख़ुशी में खाना बनवा कर लोगो में तक़सीम करवाया करते थे।

एक मर्तबा इत्तेफ़ाक़न कुछ मयस्सर ना आ सका के कुछ पका कर नियाज़ दिलवा सके लिहाज़ा थोड़े से भुने हुए चने और कन्द पर इक्तिफा करते हुए नियाज़ दिलवाई।

उसी रात हुज़ूर-ए-अकरम ﷺ की ज़ियारत हुई, आप ﷺ की बारगाह में किस्म-किस्म के खाने पेश किये जा रहे थे, इसी दौरान वो भुने हुए चने और कन्द भी पेश किये गए, इंतेहाई ख़ुशी व मस्सरत से आप ﷺ ने वो क़ुबूल फरमाए और अपनी तरफ लाने का इशारा फ़रमाया और थोड़ा सा उस में से तनावुल फ़रमा कर बाक़ी असहाब में तक़सीम फ़रमा दिए।

(ملخصاً: انفاس العارفین، ص118، 119، فرید بک سٹال لاہور)

हमे चाहिए के इख़्लास के साथ अपने नबी पाक ﷺ की विलादत की ख़ुशी मनायें ताकी हुज़ूर ﷺ क़ुबूल फ़रमा लें।

ख़ुशी के नाम पर नाजायज़ कामो का इरतेकाब करना ये, हुज़ूर ﷺ की नाराज़गी का सबब है।

अल्लाह त्आला हमे बुज़ुर्गो के नक़्शे कदम पर चलने की तौफीक अता फरमाये

आमीन

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

मीलादुन नबी की फज़ीलत पर बे असल रिवायात

मीलाद -ए- मुस्तफा ﷺ पर खुशियाँ मनाना और इस पर रक़म खर्च करना एक जायज़ व मुस्तहसन अमल है, लेकिन इसकी फज़ीलत बयान करने के लिये किसी गैर साबित रिवायत को बयान करना हरगिज़ दुरुस्त नहीं।

मीलादुन नबी पर रक़म खर्च करने की फज़ीलत पर हज़रते अबू बकर सिद्दीक रदिअल्लाहु त्आला अन्हु का क़ौल बयान किया जाता है कि "जो शख्स मीलाद पर एक दिरहम खर्च करता है वो क़यामत के दिन जन्नत में मेरे साथ होगा" इसके अलावा भी कुछ मिलते जुलते अक़्वाल खुल्फा-ए-राशिदीन और दीगर बुज़ुर्गानि दीन के हवाले से बयान किये जाते हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इरफान मदनी हफिज़हुल्लाह (अल मुताखस्सिस फिल फिक़्हे इस्लामी) लिखते है कि (हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदिअल्लाहु त्आला अन्हु की तरफ मन्सूब) मज़्कूरा बाला रिवायत हदीस की किसी मुस्तनद किताब मे नहीं मिलती, ये रिवायत "नैमतुल कुबरा" किताब में मौजूद है और ये किताब अल्लामा इब्ने हजर मक्की अलैहिर्रहमा की तरफ मनसूब है, लेकिन असल किताब "नैमतुल कुबरा" जो अल्लामा

इब्ने हजर मक्की की है उसमे ये रिवायत मौजूद नहीं है जिससे साबित होता है कि ये किताब जिसमें ये रिवायत है, ये अल्लामा इब्ने हजर मक्की की असल किताब नहीं है।

हज़रत अल्लामा अब्दुल हकीम शरफ क़ादरी अलैहिर्रहमा ने इसके जो जवाबात दिये हैं उनमे से चन्द पेशे खिदमत है :-

(1) अल्लामा इब्ने हजर मक्की दसवीं सदी के बुज़ुर्ग हैं तो लाज़मी अम्र है कि उन्होने मज़्कूरा बाला रिवायत सहाबा ए किराम से नहीं सुनी लिहाज़ा वो सनद मालूम होनी चाहिये जिस की बिना पर अहादीस रिवायत की गयी है ख्वाह वो सनद ज़ईफ ही क्यों ना हो या इन रिवायत का कोई मुस्तनद माखज़ मिलना चाहिये।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहीमहुल्लाह फरमाते हैं कि अस्नाद दीन से हैं, अगर सनद ना होती तो जिस के दिल में जो आता कह देता।

(2) हज़रत अबू हुरैरा रदिअल्लाहु त्आला अन्हु फरमाते हैं कि नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया कि मेरी उम्मत के आखिर में ऐसे लोग होंगे जो तुमको ऐसी हदीसें बयान करेंगे जो ना तुमने सुनी होगी और ना तुम्हारे आबा ने, तुम उनसे दूर रहना!

सवाल ये है कि खुल्फा-ए-राशिदीन रदिअल्लाहु त्आला अन्हुम और दीगर बुज़ुर्गानि दीन के ये इरशादात इमाम अहमद रज़ा खान फाजिले बरेलवी, शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेल्वी, इमाम रब्बानी मुजद्दिद-ए-अल्फे सानी, मुल्ला अली कारी, इमाम सुयूती, अल्लामा नब्हानी और दीगर उलमा-ए-इस्लाम की निगाहों से क्यूँ पोशीदा रहे? जबकि इन हज़रात की वुस'अत -ए- इल्मी के अपने और बेगाने सब ही मोतरिफ हैं ।

(3) अल्लामा यूसुफ नब्हानी रहीमहुल्लाह ने जवाहिरुल बिहार की तीसरी जिल्द में अल्लामा इब्ने हजर मक्की के असल रिसाले "नैमतुल कुब्रा" की तल्खीस नक़ल की है कि जो खुद अल्लामा इब्ने हजर मक्की ने तैयार की थी, असल किताब में हर बात पूरी सनद के साथ बयान की गई थी, तख्लीस में सनदों को हज़फ कर दिया गया है।

अल्लामा इब्ने हजर फरमाते है कि मेरी ये किताब मनगढ़ंत रिवायात और मुल्हिद व मुफ्तरी लोगों के इन्तेसाब से खाली है जबकि लोगों के हाथों में जो मीलाद नामे पाये जाते हैं इनमे अकसर झूठी व मौजू रिवायत मौजूद हैं।

इस किताब में खुल्फा -ए- राशिदीन और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के मज़्कूरा बाला अक़्वाल का नामो निशान तक नहीं है

इससे नतीजा निकालने में कोई दुशवारी नहीं आती कि ये एक जाली किताब है जो अल्लामा इब्ने हजर मक्की की तरफ मनसूब कर दी गयी है।

अल्लामा सैय्यद मुहम्मद आबिदीन शामी (साहिबे रद्दुल महतार) के भतीजे अल्लामा सैय्यद अहमद शामी ने असल नैमतुल कुब्रा की शरह लिखी है जिसके मुत'अद्दद इक्तिसाबात अल्लामा नब्हानी ने जवाहिरुल बिहार जिल्द सोम में नक़ल किये है, इसमें भी खुल्फा -ए- राशिदीन के मज़्कूरा वाला अक़्वाल का कोई ज़िक्र नहीं है।

(مجلہ البرہان الحق، جنوری تامارچ2012، ص9تا11)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

आला हज़रत और 8 रबीउल अव्वल

जब आशिकाने मुस्तफा अपने नबी ﷺ की आमद की खुशियां मनाते हैं तो कुछ कालिमा पढ़ने वालों को ही बहुत तकलीफ होती है ओर उन की ये परेशानी ऐतेराज़ बन कर हमारे सामने आती है।

रबीउल अव्वल की बारहवी तारीख को हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ, की आमद का जश्न मनाया जाता है तो इस पर ये ऐतेराज़ किया जाता है के नबी -ए- करीम ﷺ की विलादत तो 8 तारीख को हुई थी जैसा के आला हज़रत ने लिखा है तो फिर बारह 12 तारीख को जश्न क्यों?

हक़ीक़त में इसे ही कहते हैं "खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचे" लेकिन यहां तो खम्बा भी नहीं!

अगर हम इस बात को तस्लीम भी करलें के आला हज़रत ने 8 रबीउल अव्वल को ही दुरुस्त क़रार दिया है और 8 ही तारीख को जश्न मनाना शुरू भी करदें तो क्या इनको तकलीफ नही होगी? बिल्कुल होगी ओर ये कहेंगे के जब जमहूर उलमा का क़ौल 12 रबीउल अव्वल है तो फिर 8 तारीख को जश्न क्यों?

दर असल मसला यहां तारीख का नहीं है बल्कि मक़सूद मुसलमानों को एक कारे खैर से दुर करना है।

हमें चाहिए के ऐसे लोगों की बातों को एक कान से सुनें और दूसरे कान से निकाल दें, ये लोग हमारे बुज़ुर्गों बिल खुसुस आला हज़रत रहीमहुल्लाह की इबारात में खयानत करते हैं और आधी अधूरी बात को दिखा कर अवाम को गुमराह करना चाहते हैं

आला हज़रत रहीमहुल्लाह के मुताल्लिक़ ये कहना के उनके नज़दीक हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ की तारीख ए विलादत 8 रबीउल अव्वल है, ये क़तई दुरुस्त नही और इस पर ज़्यादा कुछ ना केह कर हम उनके एक शेर को नक़ल करने पर इकतेफा करते हैं

बारहवीं के चांद का मुजरा है सजदा नुर का,

बाराह बुर्जों से झुका इक इक सितारा नूर का

(इमाम ए अहले सुन्नत, आला हज़रत अलैहीर्रहमा)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

पेट भर कर खाना भी बिद्अत है!

उम्मुल मुमिनीन, सय्यदा आईशा सिद्दिका रदीअल्लाहु त्आला अन्हा फ़रमाती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के (दुनिया से तशरिफ़ ले जाने के) बाद जो बिद्अत सबसे पहले ज़ाहिर हुइ वो शिकम सैरि (पेट भर कर खाना) है।

(احیاءعلوم الدین،ربع المہلکات، کتاب کسر الشہوتین،الفائدۃالخامسۃ،ص1010،ط دارالکتاب العربی بیروت، س1429ھ)

वहाबियों को चाहिए के मिलाद शरीफ़ ओर दिगर मामुलाते अह्ले सुन्नत पर बिद्अत बिद्अत के फ़तवे लगाने के बजाऐ शिकम सैरि जैसी हकीकी बिद्अत के ख़िलफ़ आवाज़ उठाए!

और ख़ुद भी कम खाने कि सुन्नत पर अमल करे ताकि आपके दिमागों को कुछ हवा लगे ,सोचने समझने कि सलाहियत बेदार हो और उम्मत पर ज़ालिमाना फ़त्वे दाग़ने से बाज़ आ जाए।

अल्लामा लुक्मान शाहिद साहब किब्ला

कोई खुश कोई गमगीन

हुज़ुर -ए- अकरम ﷺ की आमद पर सिवाए कुछ बदनसीबों के सभी खुश हैं और खुशीया मना रहे हैं।

निसार तेरी चहल पहल पर हज़ार ईदें रबीउल अव्वल

सिवाए इबलीस के जहान में सभी तो खुशीया मना रहे हैं!

कोई आमिना के लाल ﷺ की मुहब्बत में उनको याद कर के खुश हो रहा है तो किसी के लिए ये यादें तकलीफ़ का सबब बनी हुई हैं। ये भी मेरे आका ﷺ का जलवा है के आप ﷺ कि फ़ूल सी ख़ुबसूरत यादें गद्दारों के दिल में कांटा बन कर चुभ रही है।

आला हज़रत क्या खूब फ़रमाते हैं,

कोई जान बस के महक रही किसी दिल में इससे ख़टक रही

नहीं इसके जलवे में यक रही कहीं फ़ुल है कहीं खार है

मेरे इमाम फ़रमाते हैं के किसी ने हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ की मुहब्बत को अपनी जान में बसाया हुआ है और आपकी यादे वफ़ादारों के दिलों में जान बन कर महक रही है और कुछ वो बदबख्त हैं के जिनको इससे तकलीफ़ हो रही है यानी आपके जलवे एक काम नहीं करते बल्कि दो काम करते हैं, वफ़ादारों को आपकी यादों से सुकून हासिल होता है और गद्दारों को इज़ा पहुंचती है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

मीलाद -ए- मुस्तफ़ा पर शैतान का रोना पीटना

जब नबीय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, इमामुल अम्बिया, सरकारे मदीना ﷺ की पैदाइश हुई तो शैतान लईन ने रोना शुरू कर दिया और ये कोई वाईज़ाना बात नहीं है बल्कि एक हक़ीक़त है। उस के चीख़ो पुकार करने के दलाईल हसबे ज़ेल हैं :-

(1) تفسیر وقیع تحت سورۂ فاتحہ

(2) تفسیر ابن مخلد تحت سورۂ فاتحہ

(3) تفسیر قرطبی تحت سورۂ فاتحہ

(4) تفسیر در منثور للسیوطی، ج1، ص17

(5) کتاب العظمۃ، ابوالشیخ، ص428

(6) معجم مقاییس اللغۃ، ابن فارس، ج2، ص380

(7) شرف المصطفی، ج1، ص347

(8) المخصص الملف الاول، ج1، ص394

(9) حلیۃ الاولیا، ج3، ص341

(10) غنیۃ الطالبین، باب فضیلت

(11, 12) الروض الانف، ج1، ص74، ص278

(13) مولد العروس، ص3

(14) الاکتفاء بما تضمنہ من مغازی رسول اللہ ﷺ، ج1، ص98

(15) الاحادیث المختارہ، ج4، ص114

(16) عیون الاثر، ج1، ص34

(17) البدایہ والنہایہ، ج3، ص42

(18) السیرۃ النبویۃ لابن کثیر، ج1، ص212

(19) المختصر الکبیر فی سیرۃ الرسول، ج1، ص7

(20, 21) سبل الہدی والرشاد، ج1، ص35 و ج2، ص218

(22) السیرۃ الحلبیۃ، ج1، ص99

(23) الدر المنظم فی مولد النبی الاعظم، ص82

(24) ضیاء النبی، ج2، ص56

(ملخصاً: لمعات مصطفی ﷺ، ص41، 42)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

सहाबा और हुज़ूर के नालैन

सहाबा -ए- किराम रदिअल्लाहो त'आला अन्हुम ने हुज़ूर ﷺ की मुहब्बत में जो कारनामे अंजाम दिए है उन को आइना बना कर देखा जाये तो हम भी अपने क़िरदार को आसानी से संवार सकते है।

सहाबा-ए-किराम की ज़िंदगीयो का मुता'अला किया जाये तो मालूम होता है के उन्हें अपने नबी ﷺ से निस्बत रखने वाली हर शै से मुहब्बत थी।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस'उद रदिअल्लाहो त'आला अन्हु नबी -ए- करीम ﷺ के नालैन को अपने पास रखा करते थे जब नबी -ए- करीम ﷺ मजलिस बर्खास्त फरमाते तो आप हुज़ूर ﷺ को नालैन पहनाया करते थे और जब उतारते तो आप नालैन को झाड़ कर अपनी आस्तीन में रख लिया करते थे और ता कियाम -ए- सानी अपने पास ही रखते।

(ملخصاً:جواہر البحار فی فضائل النبی المختار،ج1،ص41،42،ط ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور،س2013)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

क्या एक बुढ़िया हमारे नबी पर कूड़ा डालती थी?

हुज़ूर -ए- अकरम, सय्यद -ए- आलम ﷺ के अख़लाक़ो किरदार का तज़किरा करते हुए एक वाक़िया बयान किया जाता है के एक बूढी औरत थी जो रोज़ाना हमारे नबी ﷺ पर कूड़ा फेंका करती थी मगर हमारे नबी ﷺ उसे कुछ नहीं कहते थे।

वो बुढ़िया जब बीमार पड़ी तो हुज़ूर ﷺ उसकी ईयादत के लिए तशरीफ़ ले गए और उसे दुआएं भी दी, जब उस बुढ़िया ने ये करीमाना अंदाज़ देखा तो इमान ले आयी!

ये वाक़िया इतना मशहूर है के बच्चों से ले कर बूढ़ों तक को ज़ुबानी याद है।

अगर किसी मुक़र्रिर को तक़रीर के लिए "अखलाक़-ए-मुस्तफ़ा" मौज़ू दिया जाए तो इस रिवायत को बयान किये बिना उसकी तक़रीर ही मुकम्मल नहीं होगी और हो गयी तो ये अनोखी बात है।

कुछ लोगों की जुबानों पर एक जुमला गर्दिश करते रहता है के "ईस्लाम तलवार से नहीं फैला" और इस जुमले के साथ ये वाकिया ऐसा जुड़ा हुआ है गोया एक के बगैर दूसरा अधूरा है। नीज़ एक तबका जो कहता है के किसी को बुरा भला नहीं कहना चहिये, वो भी इस वाक़िये को हिफ़्ज ज़रूर करता है और इसे दलील बना कर कहता है के देखो नबी ने तो अपने ऊपर कूड़ा फेंकने वाली बुढ़िया को भी बुरा भला नहीं कहा लिहाज़ा हमें भी किसी को....अलख़।

हम आपको बताना चाहते हैं के ये रिवायत हदीस की किसी किताब में मौजूद नहीं! अगर है तो दिखाई जाए।

ईसी रिवायत के मुताल्लिक़ एक वसीउल मुताला बुजुर्ग, खलीफा -ए- हुज़ूर मुफ्तिए आज़म -ए- हिंद, शारेह बुख़ारी, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरीफुल हक अमजदी अलैहिर्रहमा से सवाल किया गया जिसके जवाब में आप रहिमहुल्लाह ने लिखा कि कूड़ा करकट डालने की रिवायत इस वक़्त याद नहीं है (लिहाज़ा) इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता।

(فتاوی شارح بخاری،ج1،ص415)

मुजाहिद -ए- अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा ख़ादिम हुसैन रिज़वी साहब क़िब्ला फरमाते हैं के ये रिवायत मौज़ू है और अंग्रेज़ो ने घड़ी है।

(علامہ خادم حسین رضوی صاحب قبلہ کے بیان سے ماخوذ)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

उलमा का इह्तिराम अल्लाह और रसूल का इह्तिराम है

फक़ीह -ए- मिल्लत, हज़रत अल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहीमहुल्लाह लिखते है कि हज़रत जाबिर रदिअल्लाहु त्आला अन्हो से रिवायत है :-

اکرموا العلماء فانھم ورثۃ الانبیاء فمن اکرمھم فقد اکرم اللہ و رسولہ

(کنزالعمال،ج10،ص78)

तर्जुमा : आलिमों की इज़्ज़त करो इसलिये कि वो अम्बिया के वारिस हैं, जिसने इनकी इज़्ज़त की तहक़ीक़ उसने अल्लाह और रसूल अज़्ज़वजल्ला व ﷺ की इज़्ज़त की

(انظر:فضائل علم وعلماء،ص65)

इस रिवायत में उलमा के इह्तिराम को अल्लाह और रसूल का इह्तिराम क़रार दिया गया है! अब जो लोग उलमा की तौहीन करते है वो ज़रा गौर करें कि क्या करते हैं

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

800 जिल्दों पर मुश्तमिल किताब

हम अगर सही से एक किताब लिखना चाहे तो सालो का वक़्त सिर्फ मवाद जमा करने में गुज़र जाता है लेकिन कुछ हस्तियां ऐसी भी गुज़री है जिन्होंने मैदान -ए- तसनीफ में ऐसी धूम मचाई है के दुनिया उन्हें भूल नहीं सकती।

चुनांचे अल्लामा इब्ने जौज़ी रहिमहुल्लाह लिखते है के अबुल वफ़ा बिन अकील अल्लाह का वो बन्दा है जिसने 80 फुनून के बारे में किताबे लिखी है और इन की एक किताब

800 जिल्दों में है और कहा जाता है के दुनिया में लिखी जाने वाली किताबो में ये सबसे बड़ी किताब है!

(ملخصاً: علم اور علما کی اہمیت، ص 20، شیخ الحدیث والتفسیر مفتی محمد قاسم قادری حفظہ اللہ، مکتبہ اہل سنت پاکستان)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

30,000 अवराक़ (पन्नों) की तफसीर

एक दिन इमाम इब्ने जरीर रहीमहुल्लाह ने अपने शागिर्दों से फरमाया कि अगर मै क़ुरान की तफसीर लिखूँ तो तुम पढ़ोगे?

शागिर्दों ने कहा कि कितनी बड़ी तफसीर होगी!

फरमाने लगे कि 30,000 (तीस हज़ार) अवराक़ (पन्नों) पर मुश्तमिल होगी!

शागिर्द कहने लगे कि इतनी लम्बी तफसीर पढ़ने के लिये इतनी लम्बी उम्र कहां से लायेंगे?

फिर इमाम इब्ने जरीर रहीमहुल्लाह ने तीन हज़ार अवराक़ पर मुश्तमिल तफसीर लिखी (अल्लाहु अकबर)

(متاع وقت اور کاروان علم، ص 184 بہ حوالہ علم اور علما کی اہمیت، ص 20، شیخ الحدیث والتفسیر مفتی محمد قاسم قادری حفظہ اللہ، مکتبہ اہل سنت پاکستان)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

इब्लीस की बेटी और दामाद

हज़रते सय्यिदुना अली खव्वास रहमतुल्लाही त्आला अलैह फरमाते हैं कि पूरी दुनिया इब्लीस लईन की बेटी है और इससे मुहब्बत करने वाला हर शख्स उसकी बेटी का खाविन्द है लिहाज़ा इब्लीस अपनी बेटी की खातिर दुनियादार शख्स के पास आता रहता है।

(عھود المحمدیۃ، قسم المامورات، ص125 بہ حوالہ الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ، ج1، ص136)

कहीं हम भी दुनिया से मुहब्बत करके इब्लीस के दामाद तो नहीं बन बैठे?

आज हमारे पास दुन्यावी इल्म है दीनी नहीं, अँग्रेज़ी बोलना जानते है लेकिन अरबी पढ़ना नहीं, घर में गाड़ियां, सोफ़ा, ए सी, फ्रिज वगैरह है मगर दीनी किताबें नहीं!!!

कहीं हम सही में इब्लीस के दामाद तो नहीं?

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

इमाम कस्तलानी और मीलाद

शारहे बुखारी, इमाम कस्तलानी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ की पैदाइश के महीने में अहले इस्लाम हमेशा से महेफिलें मुनक्किद करते चले आये है और ख़ुशी के साथ खाने पकाते रहे और दावत -ए- त्आम करते रहे है और इन रातो में अनवा -ओ- अक़्साम (तरह तरह के) खैरात करते रहे और सुरूर ज़ाहिर करते चले आये हैं और नेक कामो में हमेशा ज़्यादती करते रहे हैं और हुज़ूर ﷺ के मौलिद -ए- करीम की किरात का एहतेमाम -ए- खास करते रहे हैं जिनकी बरकतों से इन पर अल्लाह त्आला का फ़ज़्ल ज़ाहिर होता रहा है और इसके खवास से ये अम्र मुजर्रब है के इनिकादे महफिले मीलाद

उस साल में अमन -ओ- अमान का सबब होता है और हर मक़सूद व मुराद पाने के लिए जल्दी आने वाली ख़ुशख़बरी होती है तो अल्लाह त्आला उस शख्स पर बहुत रहमतें फरमाये जिसने माहे मीलाद मुबारक की हर रात को ईद बना लिया ताकि ये ईद मीलाद सख्त तरीन इल्लत हो जाये उस शख्स पर जिसके दिल में मर्ज़ व इनाद है।

अल्लामा इब्ने हाज ने मदखल में तवील कलाम किया है उन चीज़ों के इंकार करने में जो लोगों ने बिद'अते और नफ़्सानी ख्वाहिशें पैदा कर दी हैं और आलात -ए- मुहर्रमा के साथ अमल -ए- मौलूद शरीफ में ग़िना को शामिल कर दिया है तो अल्लाह त्आला उनको उनके क़स्द -ए- जमील पर सवाब दे और हमें सुन्नत की राह चलाये, बेशक वो हमें काफी है और बहुत अच्छा वकील है।

(مواہب اللدنیہ، ج1، ص27، مطبوعہ مصر)

अल्लामा कस्तलानी अलैहिर्रहमा की इस इबारत से हस्बे ज़ेल उमूर साबित हुएः-

(1) माहे मीलाद (रबीउल अव्वल) में इनिकादे महफिले मीलाद अहले इस्लाम का तरीका रहा है।

(2) खाने पकाने के एहतेमाम, अनवा -ओ- अक़्साम के खैरात व सदक़ात माहे मीलाद की रातों में अहले इस्लाम हमेशा करते रहे हैं।

(3) माहे रबीउल अव्वल में ख़ुशी व मसर्रत व सुरुर का इज़हार शिआर -ए- मुस्लिमीन है।

(4) माहे मीलाद की रातों में ज़्यादा से ज़्यादा नेक काम करना मुसलमानों का पसंदीदा तरीक़ा चला आ रहा है।

(5) माहे रबीउल अव्वल में मीलाद शरीफ पढ़ना और किरात -ए- मीलादे पाक का एहतेमाम -ए- खास करना मुसलमानों का महबूब तर्ज़े अमल है।

(6) मीलाद की बरकतों से मीलाद करने वालो पर अल्लाह त्आला का फ़ज़्ले अमीम हमेशा से ज़ाहिर होता चला आया है।

(7) महेफिल -ए- मीलाद के खवास से ये मुजर्रब खास्सा है के जिस साल में महेफिल -ए- मीलाद मुनक्किद की जायें वो तमाम साल अमनो अमान से गुज़रता है।

(8) इनिकादे महफिले मीलाद मक़सूद व मतलब पाने के लिए बुशरा -ए- आजीला (जल्द आने वाली खुशखबरी) है।

(9) मीलाद मुबारक की रातों को ईद मनाने वाले मुसलमान अल्लाह तआला की रहमतों के अहल हैं।

(10) रवीउल अव्वल में मीलाद शरीफ की महफिलें मुनक्किद करना और माहे मीलाद की हर रात को ईद बनाना यानी ईद -ए- मीलाद मनाना उन लोगों के लिये सख्त मुसीबत है जिनके दिलों में निफाक़ का मर्ज़ और अदावते रसूल की बीमारी है।

(11)अल्लामा इब्ने हाज ने मद्खल में जो इन्कार किया है वो इनिकादे महफिले मीलाद पर नहीं बल्कि उन बिद'आत और नफ्सानी ख्वाहिशात पर है जो लोगों ने महफिले मीलाद में शामिल कर दी थी, आलाते मुहर्रमा के साथ गाना बजाना मीलाद शरीफ की महफिलों में शामिल कर दिया गया था, ऐसे मुनकिरात पर साहिबे मद्खल ने इन्कार फरमाया और ऐसे नाजायज़ उमूर पर हर सुन्नी मुसलमान इन्कार करता है।

साहिबे मद्खल की इबारात से धोखा देने वालों को मालूम होना चाहिये कि इमाम क़स्तलानी ने उनका ये तिलिस्म भी तोड़ फोड़कर रख दिया है।

अल्लामा शैख इस्माईल हक्की रहीमहुल्लाह फरमाते हैं कि इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने फरमाया कि हुज़ूर ﷺ की विलादते बा स'आदत पर शुक्र ज़ाहिर करना हमारे लिये मुस्तहब है।

(تفسیر روح البیان، ج9، ص25)

(ماخوذ از میلادالنبی، غزالی زماں، علامہ سید احمد سعید کاظمی رحمہ اللہ)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

इसे कहते हैं दीन की खिदमत

इमाम शारानी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि हाफ़िज़ इब्ने शाहीन की मुस्नद फ़िल हदीस 1600 जिल्दों पर मुश्तमिल है!

और लिखते हैं कि उन्होनें जो क़ुरआन की तफ़सीर लिखी है वो 1000 जिल्दों पर मुश्तमिल है। और इसके इलावा आपकी 330 किताबें हैं।

बयान किया गया है कि शैख अब्दुल गफ्फ़ार क़ौसी ने मज़हबे शाफ़यी के बयान में 1000 जिल्दें तस्नीफ़ फरमायी।

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते हैं कि अबुल वफ़ा बिन अक़ील की एक किताब 800 जिल्दों में है और आपने 80 फुनून पर किताबें लिखी हैं ।

बयान किया गया है कि शैख अबुल हसन अश'अरी ने 600 जिल्दों की एक तफ़सीर लिखी है।

शैखे अकबर की तफ़सीर 100 जिल्दों में है।

इमाम इब्ने जरीर ने अपने शागिर्दों से फरमाया था कि अगर मै क़ुरआन की तफ़सीर लिखूं तो वो 30000 अवराक़ पर मुश्तमिल होगी।

इमाम मुहम्मद की तालीफत 1000 के क़रीब हैं।

इमाम इब्ने जरीर ने अपनी ज़िन्दगी में 3,58,000 अवराक़ (पन्ने) लिखे।

अल्लामा बाक़्लानी ने सिर्फ मोतज़िला के रद्द में 70000 अवराक़ लिखे।

इमाम सुयूती की तसानीफ़ की तादाद 500 के क़रीब है जिनमें बहुत सी कई जिल्दों पर मुश्तमिल हैं।

इमाम गज़ाली ने 78 किताबें लिखी जिनमें से सिर्फ एक किताब 40 जिल्दों की है।

मशहूर तबीब इब्ने सीना की भी कई किताबें हैं जो कई जिल्दों पर मुश्तमिल है।

हाफिज़ इब्ने कसीर अस्क़लानी की एक किताब 14 जिल्दों में है, एक 12 जिल्दों में है और एक 5 जिल्दों में है और इसके अलावा भी कई किताबें आपकी हैं।

इमाम-ए-अहले सुन्नत, सरकार आला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा रहीमहुल्लाह ने 1000 से ज़्यादा किताबें तस्नीफ़ फरमायी।

(ماخوذ از ارشاد الحیاری و علم و علما کی اہمیت)

अल्लाह त्आला इन बुज़ुर्गों के सद्क़े हमें भी लिखने की सलाहियत अता फरमाए (आमीन)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

उलमा अम्बिया के वारिस हैं

क़ुरआन -ओ- अहादीस में मुताअ'दिद्द मक़ामात पर उलमा -ए- हक़ की अज़मत -ओ- अहमियत को बयान किया गया है। कहीं उलमा की ताज़ीम को अल्लाहो रसूल की ताज़ीम करार दिया गया है तो कहीं उलमा का ज़िक्र फिरिशतो के साथ किया गया है!

उलमा की शानो शौकत का क्या कहना के खुद आमीना के लाल, रसूल -ए- बेमिसाल, नबी -ए- करीम ﷺ ने इन्हें अपना वारीस बनाया है।

हदीस -ए- पाक में इरशाद -ए- नबवी है :-

ان العلماء ورثة الانبياء

तर्जुमा: बे शक उलमा अम्बिया के वारिस हैं।

(ملتقطاً: سنن ابی داؤد، ج2، کتاب العلم، ح3641 وابن ماجہ، ج1، ح223)

इस रिवायात को पढ़ कर बाज़ लोगो को शुब्हा हो सकता है के यहाँ उलमा से मुराद कौन हैं? क्या इस से सिर्फ औलिया -ए- दीन मुराद हैं या हर आलिम -ए- दीन?

इस ज़िम्न में हम फतावा रज़विया से एक इक़्तेबास पेश करते हैं, मुलाहिज़ा फरमाये :-

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहिमहुल्लाह से दो लोगो के मुताल्लिक़ सवाल हुआ जिस में से ज़ैद का कहना है के "उलमा अम्बिया के वारिस है" में उलमा -ए- शरीअत व तरीक़त दोनो दाखिल है और जो शरीअत व तरीक़त का जामे है वो विरासत के अज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ है जबकि (दूसरे शख्स) अम्र का बयान है के शरीअत तो बस नाम है चंद फ़राइज़ व वाजिबात व सुनन व मुस्तहिब्बात व चंद मसाइल -ए- हलाल -ओ- हराम का और तरीक़त नाम है वुसूल इल्लल्लाह (अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने) का और इस में हक़ीक़त -ए- नमाज़ वगैरा मुनक्शीफ होती है तरीक़त बहरे नापेदा किनार (बिना किनारे का समन्दर) है और दरया -ए- ज़खार (मौजे मारता हुआ दरया) है वो इस दरया के मुकाबले में एक क़तरा है।

विरासत -ए- अम्बिया का यही वुसूल इलल्लाह मक़सूद व मन्शा है और यही शान -ए- रिसालत -ओ- नबूवत का तकाज़ा है, इसी के लिए वो मअ'बूस हुए।

ज़ाहिरी उलमा किसी तरह इस विरासत के काबिल नहीं हो सकते और न वो उलमा -ए- रब्बानी है.....अलख

आलाहज़रत रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया के ज़ैद का क़ौल हक़ व सहीह और अम्र का ज़ैमे बातिल व क़बीह व इल्हाद -ए- सरीह है (अम्र के बयान का रद्द करते हुए मज़ीद फरमाते है के) शरीअत सिर्फ चंद अहकाम का ही नाम नहीं बल्कि तमाम अहकाम -ए- जिस्मो जान व रुह -ओ- क़ल्ब व जुमला उलूम -ए- इलाहिया व मआरिफ़ -ए- ना मुतनाहिया

को जामे है जिन में से एक एक टुकड़े का नाम तरीक़त व मारिफ़त है (मज़ीद लिखते है के) तरीक़त में जो कुछ मुनकशिफ होता है वो शरीअत ही के इत्तेबाअ का सदका है।

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ ने उम्र भर जिस रास्ते की तरफ बुलाया तो उस का खादिम, उस का हामी और उस का आलिम क्यों कर उनका वारिस न होगा? हम पूछते है के अगर बिल्फर्ज़ शरीअत सिर्फ चंद अहकाम ही के इल्म का नाम हो तो ये इल्म रसूलुल्लाह ﷺ से है या किसी और से? इस्लाम का दावा करने वाला ये ज़रूर कहेगा के ये इल्म हुज़ूर ﷺ ही से है, फिर इसका आलिम हुज़ूर ﷺ का वारिस न हुआ तो किस का होगा?

इल्म उन का तरका है फिर इसे पाने वाला उनका वारिस न हो इस के क्या माना?

अगर ये कहे के इल्म तो ज़रूर उनका है मगर दूसरा हिस्सा यानी इल्मे बातिन इसने न पाया लिहाज़ा वारिस न ठहेरा तो ए जाहिल! क्या वारिस के लिए ये ज़रूरी है के मोरिस का कुल माल पाए? यूँ तो आलम में कोई सिद्दीक़ उनका वारिस न ठहेरेगा और इरशाद -ए- अक़दस ﷺ "उलमा अम्बिया के वारिस है" गलत बन कर मुहाल हो जायेगा के उनका कुल इल्म तो किसी को मिल ही नहीं सकता।

(ملتقطاًوملخصاً: مقال العرفاء باعزاز شرع وعلماء- یہ رسالہ فتاوی رضویہ کی 26ویں جلد میں موجود ہے)

मज़कूरा इक़्तेबास के मुताअले से ये खलजान दूर हो जाना चाहिए के अम्बिया के वारिस कौन से उलमा है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

इब्लीस की बीवी का नाम

एक शख़्स ने इमाम शयबी रदिअल्लाहु त्आला अन्हु से पूछ लिया कि इब्लीस की बीवी का क्या नाम था?

अब बताईये कि इसका जवाब जानकर उस शख़्स को क्या फायदा होता? क्या ये अक़ाइद का हिस्सा है या कोई ज़रूरी मस'अला है?

इमाम शयबी रदिअल्लाहु त्आला ने भी सवाल के जैसा ही जवाब अता फरमाया। आपने फरमाया कि इब्लीस के निकाह में मै शरीक नही हो पाया था, इसलिये (उसकी बीवी के) नाम से वाक़िफ़ नहीं।

(المراح فی المزاح، ابوالبرکات بدرالدین محمد شافعی، ص69، ملخصاً)

हमें चाहिये कि जब उल्मा से सवाल करने का मौका मयस्सर आये तो फालतू सवाल करके वक़्त को बरबाद ना किया जाये बल्कि ज़रूरी सवाल किया जाये जिसका जवाब मुफीद साबित हो

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

वो जो ना थे तो

इमाम -ए- आज़म, इमाम अबु हनीफा अलैहिर्रहमा लिखते हैं के :-

انت الذی لولاك ما خلق امرؤ

کلا ولا خلق الوری لولاک ـــــــــ

यानी आप ﷺ की ज़ात वो मुक़द्दस ज़ात है के अगर आप ﷺ ना होते तो कोई फ़र्दे बशर पैदा न होता बल्कि सिरे से किसी मख़्लूक की तखलीक ही ना होती

इसी फ़िक्र के जलवे इमाम -ए- अहले सुन्नत, आलाहज़रत रहिमहुल्लाह के कलाम में भी झलकते है, चुनान्चे आप लिखते है :-

वो जो ना थे तो कुछ ना था

वो जो ना हो तो कुछ ना हो

जान है वो जहान की

जान है तो जहान है

(ماخوذاز مضمون "کلام رضا میں فکر بو حنیفہ کے جلوے" محرر شیخ الحدیث مولانا محمد حنیف حبیبی مصباحی، ملخصاً)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

दुआ -ए- मुस्तफ़ा ﷺ और हज़रत अमीर -ए- मुआविया

नबीए करीम ﷺ ने हज़रत अमीर -ए- मुआविया रदिअल्लाहो त'आला अन्हु के लिए दुआ फरमाई के ए अल्लाह! इसे हादी व महदी बना, इसे हिदायत दे और इस के ज़रिये लोगों को हिदायत दे।

(1) سنن ترمذی، ج5، ص687، ر3842

(2) التاریخ الکبیر، ج5، ص240، ر791

(3) الطبقات الکبری، ج7، ص292، ر3746

(4) مسند احمد بن حنبل، ج29، ص426، ر1789

(5) التاریخ الکبیر (السفر الثانی)، ج1، ص349

(6) الآحاد والمثانی، ج2، ص358، ر1129

(7) السنة، ج2، ص450، ر697، 699

(8) معجم الصحابہ، ج4، ص490، ر1948

(9) معجم الصحابہ، ج2، ص146

(10) المعجم الاوسط، ج1، ص205، ر656

(11) مسند الشامیین، ج1، ص181، ر311

(12) الشریعہ، ج5، ص2436، ر1915

(13) طبقات المحدثین، ج2، ص343

(14) فوائد، ص211، ر452

(15) تاریخ اصبھان، ج1، ص221

(16) معرفۃ الصحابہ، ج4، ص1836، ر4634

(17) حلیۃ الاولیاء، ج8، ص358

(18) جزء فی احادیث من مسموعات، ص51

(19) تالی تلخیص المتشابہ، ج2، ص539، ر328

(20) الحجۃ فی بیان المحجۃ وشرح عقیدۃ اہل السنۃ، ج2، ص404، ر379

(21) تاریخ دمشق، ج59، ص80تا83

(22) الاحکام الشرعیۃ الکبری، ج4، ص428

(23) جامع الاصول، ج9، ص107

(24) اسد الغابہ فی معرفۃ الصحابہ، ج5، ص155، ر4985

(25) تھذیب الاسماء واللغات، ج2، ص104

(26) مشکوۃ المصابیح، ج3، ص1758، ر6244

(27) تھذیب الکمال فی اسماء الرجال، ج17، ص322

(28) سیر اعلام النبلاء، ج3، ص125، 126

(29) معجم الشیوخ الکبیر، ج1، ص155

(30) تاریخ اسلام، ج4، ص301

(31) الوافی بالوفیات، ج18، ص124

(32) جامع المسانید، ج5، ص536

(33) البدایہ والنھایہ، ج8، ص129

(34) اتحاف المھرۃ بالفوائد المبتکرۃ من اطراف العشرۃ، ج10، ص625، ر13513

(35) اطراف المسند، ج4، ص268، ر5869

(36) تاریخ الخلفاء، ص152

(37) الصواعق المحرقہ، ص310

(38) مکتوبات(امام مجدد الف ثانی)،مکتوب251،دفتر اول،ج1،ص58

(39) انسان العیون،ج3،ص136

(40) سمط النجوم،ج3،ص155

(41) ازالۃ الخفاء،ج1،ص572،571

(42) الناھیۃ،ص15

ख़्याल रहे! ये दुआ उस ज़ात ने फरमाई है जिसके गुलाम मुस्तजिबुद्दावात है

(ماخذ: من ھو معاویہ از علامہ لقمان شاہد صاحب قبلہ)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

हज़रते अमीर -ए- मुआविया मोमिनो के मामू हैं

हज़रते अमीर -ए- मुआविया रदिअल्लाहो त'आला अन्हु नबी - ए- करीम ﷺ की ज़ौजा सैयदा उम्मे हबीबा बिन्ते अबु सुफियान के भाई है लिहाज़ा मोमिनो की माँ के भाई मोमिनो के मामू हुए और कई मोतबर उलमा -ए- किराम ने ये बात सिर्फ लिखी ही नहीं बल्कि इस पर ऐतेराज़ करने वालो को मुंह तोड़ जवाब भी दिया है।

(1) السنۃ،ج2،ص434،ر659

(2) ایضاً،ر658

(3) ایضاً،ص433،ر657

اسکات الکلاب العاویۃ بفضائل خال المؤمنین معاویہ، ص75 (4)

معاویہ بن ابی سفیان شخصیتہ وعصرہ الدولۃ السفیانۃ، ص214 (5)

الشریعہ، ج5، ص2448، ر1930 (6)

تفسیر ابن عباس، تحت تفسیر سورہ ممتحنہ، آیت نمبر7 (7)

الثقات للعجلی، ص127، 128، ر218 (8)

البدء والتاریخ، ج5، ص13 (9)

ایضاً، ص149 (10)

الشریعہ، جلد5، ص2431، 2448، ر1930 (11)

الاعتقاد، اعتقاد فی الصحابۃ، ص43 (12)

الحجۃ فی بیان المحجۃ وشرح عقیدۃ اہل السنۃ، ج1، ص248 (13)

الاباطیل والمناکیر والصحاح والمشاہیر، ص116، ر191 (14)

کتاب الاربعین فی ارشاد السائرین الی منازل المتقین اوالاربعین الطائیۃ، ص174 (15)

تاریخ دمشق، ج59، ص55، ر7510 (16)

مثنوی مولوی معنوی، دفتر دوم، بیدار کردن ابلیس معاویہ را کہ برخیز کہ وقت نماز بیگاہ شد، صفحہ نمبر63 (17)

مرقاۃ المفاتیح، ج4، ص1557 (18)

مرآۃ المناجیح، ج3، ص320 (19)

امیر معاویہ کے حالات، پہلا باب، ص40 (20)

لمعۃ الاعتقاد، ص40 (21)

مختصر تاریخ دمشق لابن عساکر، ج2، ص284 (22)

البدایہ والنہایہ، ج4، ص163 (23)

(24) ایضاً، ج8، ص125

(25) التعاظ الحنفاء باخبار الائمۃ الخ، ج1، ص131

(26) الصواعق المحرقہ، ص355

(27) مرقاۃ للقاری، ج8، ص3258، ر5203

(28) غذاء الالباب، ج2، ص457

(29) تحقیق الحق از پیر مہر علی، ص159

(30) فیضان سنت، ص937،938

(ماخوذ از من ھو معاویہ مصنفہ علامہ لقمان شاہد صاحب قبلہ)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

इमाम आमश और किस्सा गो मुकर्रिर

जब इमाम आमश रहीमहुल्लाह बसरा गये तो वहाँ की जामा मस्जिद में तशरीफ ले गये।

आपने मस्जिद में देखा कि एक क़िस्सा गो शख्स ये बयान कर रहा था कि "हज़रत आमश से हज़रत अबु इस्हाक ने रिवायत किया और हज़रत आमश ने अबु वायिल से रिवायत किया......"

ये सुनकर इमाम आमश रहीमहुल्लाह हल्क़े (महफिल) के दरमियान खड़े हो गये और बाज़ू बुलंद करके बगल के बाल उखाड़ने लगे!

जब उस क़िस्सा गो मुक़र्रिर ने इमाम आमश को देखा तो कहने लगा "ए बूढ़े इन्सान! क्या तुझे इतनी भी हया नहीं कि हम यहाँ ईल्म की महफिल में बैठे है और तू ऐसा काम कर रहा है?"

इमाम आमश ने फरमाया कि मै जो काम कर रहा हूँ वो उससे बेहतर है जो तुम कर रहे हो!

वो बोला कैसे?

इमाम आमश रहीमहुल्लाह ने फरमाया:

इसलिये कि मै एक सुन्नत अदा कर रहा हूँ और तू झूठ बोल रहा है,

मै ही आमश हूँ और जो कुछ तुम बोल रहे थे उसमे से कुछ भी मैने तुमसे बयान नहीं किया।

जब लोगों ने इमाम आमश रहीमहुल्लाह की बात सुनी तो उस क़िस्सा गो मुक़र्रिर से हटकर आपके गिर्द जमा हो गये और अर्ज करने लगे कि "ए अबू मुहम्मद! हमें अहादीसे मुबारका सुनाईये"

(تحذیر الخواص للسیوطی، الفصل العاشر فی زیادات، ص14 بہ حوالہ قوت القلوب، ج1، ص723، ملخصاً)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

लाख गुनहगार है लेकिन मेरे सहाबा का गुस्ताख तो नहीं

इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाह के पड़ोस में एक फासिक़ो फाजिर शख्स रहता था।

एक दिन उसने इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाह को सलाम किया तो आपने सहीह से जवाब ना दिया और नाखुशी का इज़हार किया।

उस शख्स ने कहा : ए अबु अब्दुल्लाह! आप मुझसे नाखुश क्यों हैं? आपको मेरे (गुनाहों के) बारे में जो कुछ मालूम है, एक ख्वाब देखने के बाद मै उससे तौबा कर चुका हूँ।

इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाह ने फरमाया क्या ख्वाब देखा?

उस शख्स ने कहा : मुझे ख्वाब में जाने जहाँ, सरवरे कौनो मकाँ ﷺ की इस तरह ज़ियारत हुई कि आप ﷺ ज़मीन के एक बुलन्द हिस्से पर तशरीफ फरमा हैं और बहुत से लोग नीचे बैठे हुए हैं उनमें से एक एक शख्स उठकर आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर होता है और अर्ज़ करता है कि हुज़ूर मेरे लिये दुआ फरमायें, आप ﷺ हर एक के लिये दुआ फरमाते। वहाँ मौजूद तमाम लोगों ने दुआ करवायी, सिर्फ मै बाकी रह गया

मैने खड़े होने का इरादा किया लेकिन अपने बुरे आमाल की बिना पर शरमा गया और मुझे उठने की हिम्मत ना हुई

रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फरमाया : ए फुलाँ, तू उठ कर हमारे पास क्यों नहीं आता, हमसे दुआ की दरख्वास्त क्यों नहीं करता? ताकि हम तेरे लिये भी दुआ करें

मैने अर्ज़ कि या रसूलल्लाह ﷺ मेरे करतूत बहुत बुरे हैं जिसकी वजह से मैं शर्मिन्दा हूँ और ये शर्मशारी मुझे खड़ा होने से रोक रही है।

सुल्ताने दो जहाँ ﷺ ने इरशाद फरमाया : अगर शर्म तुझे खड़ा होने से रोक रही है तो हम तुम्हें कहते हैं कि उठकर हमसे दरख्वास्त करो, हम तुम्हारे लिये दुआ करेंगे (सुब्हान अल्लाह) क्यों कि तुम (गुनहगार तो हो लेकिन) हमारे किसी सहाबी को गाली नहीं देते (उनकी बुराई नहीं करते)।

मैं उठकर खड़ा हो गया, आप ﷺ ने मेरे लिये भी दुआ फरमायी, मै जब बेदार हुआ तो मुझे अपने तमाम बुरे कामों से नफरत हो चुकी थी

इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाह अपने शागिर्दों को हुक्म दिया करते थे कि इस हिकायत को याद कर लो और इसे बयान किया करो क्योंकि ये फायदेमंद है।

(انظر: مصباح الظلام بہ حوالہ طبقات الحنابلہ از قاضی ابویعلی حنبلی، 1/118)

अल्लाह त्आला हमें सहाबा-ए-किराम की सच्ची मुहब्बत अता फरमाए और उनके गुस्ताखों की सोहबत से बचाये (आमीन)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

अल्लामा इब्ने हजर मक्की और हज़रत अमीर -ए- मुआविया

मशहूर मुहद्दिस, शैखुल इस्लाम, इमाम इब्ने हजर मक्की शाफ़ई रहमतुल्लाहि त'आला अलैह (मुतवफ्फा 979 हिजरी) फरमाते है के बिला शुब्हा सय्यीदुना मुआविया रदिअल्लाह त्आला अन्हु नसब, क़राबत -ए- रसूल, हिल्म और इल्म के ऐतबार से अकाबीर सहाबा में से है।

पस इन अवसाफ की वजह से जो आपकी ज़ात में बिल इजमा पाए जाते है वाजिब ज़रूरी है के आपसे मुहब्बत की जाये।

(تطہیر الجنان واللسان عن الخطور والتفوہ بثلب سیدنا معاویہ بن ابی سفیان، صفحہ نمبر 3 بہ حوالہ من ھو معاویہ)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

आला हज़रत और तक़रीर

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहिमहुल्लाह ज़्यादा वाज़ न फ़रमाया करते, आप का मामूल था कि साल में तीन वाज़ मुस्तकिलन फ़रमाया करते।

हर किसी की तक़रीर नहीं सुनते थे:-

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी रहिमहुल्लाह फरमाते है के आला हज़रत की आदत थी के दो तीन आदमियों के इलावा किसी की तक़रीर नहीं सुनते थे उन दो तीन आदमीयो में मैं भी एक था।

आलाहज़रत ये इरशाद फ़रमाया करते थे के उमूमन मुक़र्रिरीन और वायेज़ीन में इफरात व तफरीत होती है, अहादीस के बयान करने में बहुत सी बातें अपनी तरफ से मिला दिया करते है और इन को हदीस करार दिया करते है जो यक़ीनन हदीस नहीं है, अलफ़ाज़ -ए- हदीस की तफ़्सीर व तशरीह और इस में बयान -ए- निकात अम्रे आखिर है और ये जाएज़ है मगर नफ़्स -ए- हदीस में इजाफ़ा और जिस शै को हुज़ूर ﷺ ने ना फ़रमाया हो उसका हुज़ूर ﷺ से निस्बत करना यक़ीनन हदीस घढ़ना है जिस पर सख्त वईद वारिद है लिहाज़ा मैं ऐसी मजलिस में शिरकत पसंद नहीं करता जहा इस किस्म की खिलाफ -ए- शरह बात हो

(ملخصاً: حیات اعلیٰ حضرت وتذکرۂ اعلیٰ حضرت)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

हुज़ूर ग़ौसे पाक और धोबी का झूटा वाकिया

बयान किया जाता है के हुज़ूर गौसे पाक अलैहिर्रहमा का एक धोबी था, जब उस का इंतेक़ाल हुआ तो क़ब्र में फिरिश्तो ने उस से सवाल किए जैसा के सब से करते है।

उस ने हर सवाल के जवाब में कहा के "मैं गौसे पाक का धोबी हूँ" और उसे बख्श दिया गया।

इस रिवायात के मुताल्लिक़ फ़क़ीह -ए- मिल्लत, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहिमहुल्लाह लिखते है के ये रिवायात बे अस्ल है, इसका बयान करना दुरुस्त नहीं लिहाज़ा जिस ने इसे बयान किया वो इस से रुजू करे और आईन्दा इस रिवायात के ना बयान करने का अहेद करे, अगर वो ऐसा ना करे तो किसी मोअतमद किताब से इस रिवायात को साबित करे

(انظر: فتاوی فقیہ ملت، کتاب الشتی، ج2، ص411، ط شبیر برادرز لاہور، س2005ء)

शारेहे बुखारी, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरीफ उल हक अमजदी अलैहिर्रहमा इस रिवायात के मुताल्लिक़ लिखते है के ये हिकायत ना मैंने किसी किताब में देखी है और ना किसी से सुनी है

अहादीस में तसरीह है के अगर (मरने वाला) मोमिन होता है तो क़ब्र के तीनों बुनियादी सवालो का जवाब दे देता है, मुनाफ़िक़ या काफिर होता है तो ये कहता है के हाय हाय मैं नहीं जानता लिहाज़ा ये रिवायात हदीस के खिलाफ है मगर ये बात हक़ है के हज़रात -ए- औलिया -ए- किराम, अइम्मा -ए- दीन, बुज़ुर्गाने दीन अपने मुरीदीन और मुताल्लिक़ीन की क़ब्रो में नकिरैंन के सवालात के वक़्त तशरीफ़ लाते है और जवाब में आसानी पैदा करते है।

(ملخصاًوملتقطاً: فتاوی شارح بخاری، کتاب العقائد، ج2، ص125، ط دائرۃ البرکات گھوسی، س1433ھ)

मुफ्ति -ए- आज़म हॉलैंड, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अब्दुल वाजिद क़ादरी रहिमहुल्लाह मज़कूरा रिवायत के बारे में लिखते है के ग़ालिबन यही वाकिया या इस के मिस्ल "तफरीहुल खातिर" में है लेकिन इस के बयान में तहक़ीक़ ज़रुरी है, यूँ ही मुबहम तौर पर बिला तौजीह के बयान करना खिलाफ -ए- एहतियात है जिससे बचना ज़रुरी है

(انظر: فتاوی یورپ، کتاب الصلوٰۃ، ص220)

हज़रत मौलाना मुहम्मद अजमल अत्तारी साहब इस रिवायात को नक़ल करने के बाद फ़क़ीह -ए- मिल्लत का क़ौल बयान करते है के रिवायात -ए- मज़कूरा बे अस्ल है, इस का बयान करना दुरुस्त नहीं लिहाज़ा जिस ने इसे बयान किया वो इस से रुजू करे.....अलख़

(انظر: امام الاولیاء، ص70، ط مکتبہ اعلی حضرت لاہور، س1433ھ)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

OUR OTHER PAMPHLETS